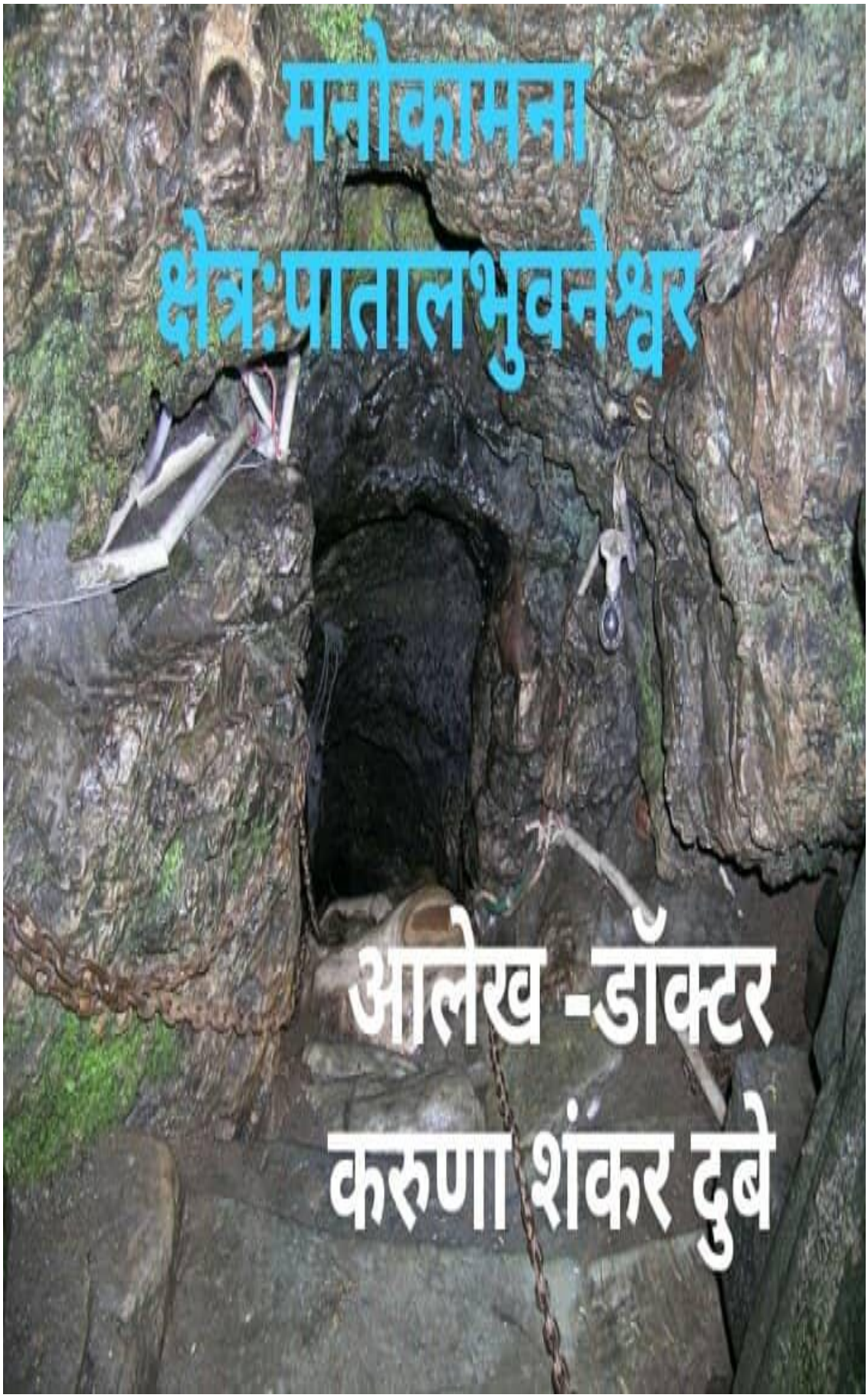
मनोकामना
क्षेत्र: पाताल भुवनेश्वर
आलेख -डॉक्टर
करुणा शंकर दुबे

मनोकामना क्षेत्र : पाताल भुवनेश्वर

पर्यटक–डॉ0 करुणा शंकर दुबे

उत्तराखण्ड़ कुमाऊं मंड़ल के प्रसिद्ध नगर अल्मोड़ा जनपद के रामगंगा और सरयू नदी के मध्य लगभग एक हज़ार तीन सौ पचास मीटर की ऊंचाई पर स्थित पाताल भुवनेश्वर गुफा शिव मंदिर है। यहाँ देवदार के घने वनों के बीच से चितई स्थित गोलज्यू देव मन्दिर मार्ग से आकाशवाणी की टीम के साथ मुझे जाने का सौभाग्य मिला , जब यात्रा का आरम्भ किया तो चितई मंदिर से आगे यह रास्ता धौली देवी गरुड़ाबाज़ स्थित 1950 मीटर की ऊंचाई पार करते हुए , बाडेछीना के रास्ते से कहीं खाई,कहीं घाटी और कहीं दोनां ओर खड़े ऊँचे पहाड़ अपनेआप में डरावने से कम नहीं थे,आगे बढ़ते हुए घोर भूस्खलन क्षेत्र शेराघाट पुल पार करके 160 किलोमीटर आगे बढ़ आये थे , यह घनघोर बादलों का क्षेत्र है , बेरीनाग का नजदीकी क्षेत्र पहाड़ीवादियों के बीच बसे सीमान्त कस्बे राईआगर तिराहे से गंगोलीहाट के दाहिने गुप्तड़ी से घूमकर मेजर समीर द्वार से गन्तव्य मंदिर पहुंच सके । इसके मुख्य द्वार पर एक ओर वृद्ध पाताल भुवनेश्वर मंदिर का विवरण है और डाकघर की सूचना भी है।

उसके आगे बढ़ने पर उत्तराखण्ड़ राज्य की ओर से एक सुसज्जित आकर्षक पट्टिका लगी हुई है , जिसपर बहुत कुछ अपेक्षित जानकारी मिलती है।

इस शिला पट्ट को पढ़कर आगे बढ़ते हुए आपको एक ओर घंटियों से सुरक्षित मार्ग मिलेगा तो दूसरी ओर पीने के पानी की नैसर्गिक व्यवस्था भी प्रकृति की भेंट के रुप में दिखलाई पड़ेंगी।

इसके आगे आपको मुख्य द्वार के दर्शन होंगे । यहाँ स्पष्ट शब्दों में लिखा हुआ है मंदिर कमेटी पाताल भुवनेश्वर आपका स्वागत करती है।

यहाँ मंदिर कमेटी के कुछ नियम है ,जिसका पालन सभी के लिए हितकारी होता है,क्योंकि यह क्षेत्र जाखिम भरा हुआ है,इसकी सूचना मंदिर समिति ने पंजीकरण कक्ष (ENTRY ROOM)के दोनो ओर लिख रखी है ,जो इस प्रकार से है :–यात्रियों से विनती है कि उनके पास जो भी भारी सामान ,कैमरा,मोबाईल,हैण्ड़ीकैम,हथियार हो तो उसे स्वागती कक्ष में जमा करें,

यदि ग्रुप का कोई व्यक्ति बाहर बैठा हो तो अपना सामान उनको दे दें,

मंदिर खुलने का समय ग्रीष्म कालीन 08.00 प्रातः से 06.00सायं और शीत कालीन 09.00बजे प्रातः से 05.00सायं तक है।

सूचना के दूसरी ओर विवरण लिखा है कि आपके द्वारा देय धनराशि की रसीद अवश्य प्राप्त करें ।

अपने पर्स व कीमती सामान की जिम्मेदारी पर्यटक की होगी,जिसमें मंदिर कमेंटी जिम्मेदार नहीं होगी,

बिना गाईड़ के गुफा में प्रवेश निषेध है,

किसी भी दुर्घटना के लिए यात्री स्वयं जिम्मेदार रहेगा।

यात्रियों के बैठने के लिए बाहर पर्याप्त व्यवस्था बनाई गयी है।अपनी बारी आने पर प्रवेश दिया जाता हैं। प्रवेश द्वार पर बैठकर फिर अपनी युक्ति के आधार पर आगे की यात्रा आरम्भ होती है।

पाताल भुवनेश्वर देवदार के घने जंगलों के बीच एक भूमिगत गुफा है,जिसमें से यहाँ एक बड़ी गुफा के अन्दर आदि गुरु शंकराचार्य की प्राण प्रतिष्ठा से शिवलिंग स्थापित हैं। यह सम्पूर्ण परिसर वर्ष 2007 से भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा अधिकृत किया जा चुका है। पाताल भुवनेश्वर किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह गुफा प्रवेश द्वार से 160 मीटर लम्बी और 90 फीट गहरी है। पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार पाताल भुवनेश्वर की खोज आदि गुरु शंकराचार्य ने ही सबसे पहले की थी । पाताल भुवनेश्वर गुफा में भगवान केदारनाथ ,बद्रीनाथ और अमरनाथ जी के भी दर्शन होते है। पुराणों में मान्यता के अनुसार पाताल भुवनेश्वर के अलावा कोई ऐसा स्थान नहीं हैं,जहाँ एक साथ सभी केदारनाथजी , बद्रीनाथजी और अमरनाथ धाम जी के दर्शन होते हों। यह पवित्र एवं रहस्यमयी गुफा अपने आप में अनन्त काल का इतिहास समेटे हुए है ऐसी मान्यता है कि इस गुफा में तैंतिस करोड़ देवी–देवताओं ने अपना निवास स्थान बना रखा है। पुराणों में लिखा है कि त्रेता युग में सबसे पहले इस गुफा को राजा ऋतुपर्ण ने देखा था। अपनी पत्नी दमयन्ती को द्यूत क्रीड़ा में हारने के कारण राजा ऋतुपर्ण यहीं छिपने आये थे । इस प्रकार से स्पष्ट है कि राजा ऋतुपर्ण के समय से इस गुफा के विषय में चर्चा होती रही है। राजा ऋतुपर्ण त्रेतायुग में अयोध्या पर शासन करते थे,वहाँ के पुजारी ने जानकारी दी कि स्कन्द पुराण में राजा ऋतुपर्ण की कथा आती है। द्वापर युग में पाण्ड़वों ने यहाँ भगवान शंकर के साथ चौपड़ खेला था,और कलयुग में जगत् गुरु शंकराचार्य का जब इस गुफा से साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने ताम्रपत्र का एक शिवलिंग स्थापित किया । यह भी मान्यता है कि आदि गुरु शंकराचार्य ने लगभग 1191 ई0 में पाताल भुवनेश्वर गुफा तीर्थ की यात्रा की थी,और सम्भवतः इसी समय से इस स्थान की यात्रा लोगों ने आरम्भ की और इसके इतिहास की शुरुआत हुई। इसके बाद चंद राजाओं ने इस गुफा को खोजा। आज के समय में पाताल

भुवनेश्वर भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। देश विदेश से गुफा के दर्शन करने के लिए लोग आते रहते हैं। इस गुफा में बारिश के मौसम में अथवा जब बादल पहाड़ के सामने आ जाते हैं ,तो आक्सीजन की कमी हो जाती है,और दर्शन के कार्य रोक दिये जाते हैं। एक बार में गुफा के अन्दर अधिकतम पच्चीस लोग ही प्रवेश कर सकते हैं। गुफा उत्तराभिमुख है,और उसमें प्रवेश करने के लिए 82 सीढ़ियों से नीचे के मैदान क्षेत्र में पहुँचा जा सकता है,किन्तु वर्तमान समय में सीढ़ियों की दशा अच्छी नहीं रह गयी है। प्रवेश करते समय अधिकतर कुछ–कुछ फिसलन होती है,लोग स्वयं आगे बढ़ जाते हैं।एक प्रकार से सीढ़ियां सहज नहीं हैं,किन्तु यात्रा पूरी होने के बाद अपार सुख की अनुभूति कराने में सक्षम है। उसका कारण यह है कि लोग चढ़ने और उतरने के लिए लगी हुई लोहे की जंजीर बहुत ही कारगर और सहायक है, कुछ सीढ़ियों को उतरने के बाद भगवान् नृसिंहदेव की मूर्ति दिखाई पड़ती है,गुफा के अन्दर नीचे की ओर बढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि अन्दर का दृश्य एक गाय के थन की आकृति रुप नज़र आती है, यह आकृति कामधेनु गाय का स्तन है,कहा जाता है कि देवताओं के समय में इस स्तन से दुग्ध की धारा बहती थी,आज कलियुग के समय दूध के स्थान पर पानी इसमें से टपक रहा है, कुछ नीचे जाते ही शेषनाग के फनों की तरह उभरी संरचना वाले पत्थरों के फणों का आकर्षक दर्शन शोभायमान होता है,मान्यता हैकि पृथ्वी इन्हीं के फणों पर टिकी हुई है।

शेषनागफण के बगल में हवनकुण्ड़ है ।

राजा जन्मेजय ने सर्पयज्ञ यहीं किया था,तक्षक नाग का उभरा हुआ भित्तिचित्र और वासुकी नाग का चित्र भी दर्शनीय है। इसी के एक ओर से एक ढलान का मैदान है ,जहाँ पारिजात वृक्ष है।

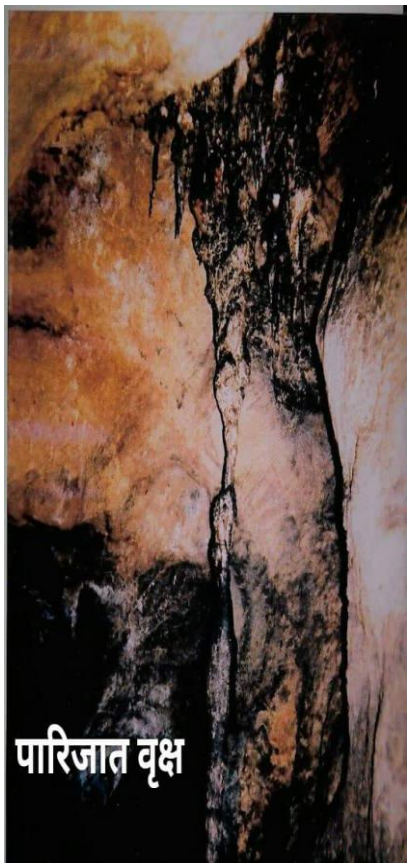

गुफा के बायी ओर मुड़ते ही अन्दर की ओर सिर विहिन प्रस्तर का भगवान् गणेश का मस्तक है,इस पाताल भुवनेश्वर में सिर विहीन शिला मूर्ति के ठीक ऊपर पंखुड़ियों वाला ब्रह्मकमल एक चट्टान है । इस ब्रह्मकमल के पानी से भगवान् गणेश के क्षतसिर पर पानी की बूंद टपकती है। ऐसा कहा जाता है कि यह ब्रह्मकमल भगवान् शिव ने ही यहाँ स्थापित की थी।

इससे आगे बांये बढ़ने पर शिव जी की विशाल जटाओं के दर्शन होते है जहां से निरन्तर पानी बहता रहता है,इस दृश्य को साक्षात् देखने के बाद स्पष्ट होता है कि जटाओं के सफेद वाले भाग में भागीरथी गंगा समाहित हैं, जो मूर्तिवत् वहां स्वयं खड़े हैं।

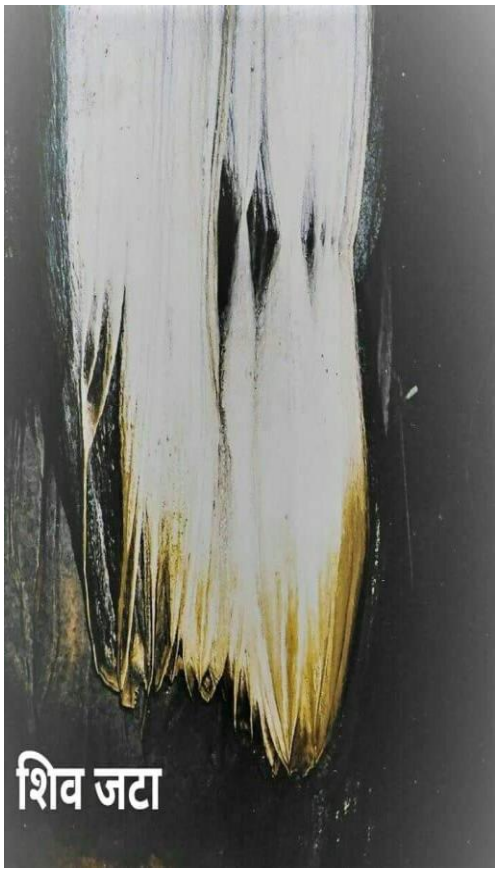

नीचे नर्वदेश्वर महादेव हैं इसी के नीचे एक छोटा कुण्ड़ है ,जिसके समीप नन्दी भी है।

इससे और भी आगे बढ़ने पर इस गुफा में एक विशालकाय हंस(गरुड़)एक कुण्ड़ के उपर बैठा दिखाई देता है। शिव जी ने इस कुण्ड़ को अपने नागों के पानी पीने के लिए बनाया था। इसकी देखरेख गरुड़ जी के हाथ में थी ,लेकिन जब गरुड़ जी ने ही इस कुण्ड़ से पानी पीने की कोशिश की तो शिव जी ने गुस्से में हंस की गरदन मरोड़ दी ।

इसी के समीप ताम्बे की आदि गुरुशंकराचार्य द्वारा स्थापित शिवलिग है,जिसके आगे की गुफा अब बंद है,यहीं से मुड़कर वापस लौटनें पर दाहिनी ओर से एक ढलान का मैदान है।

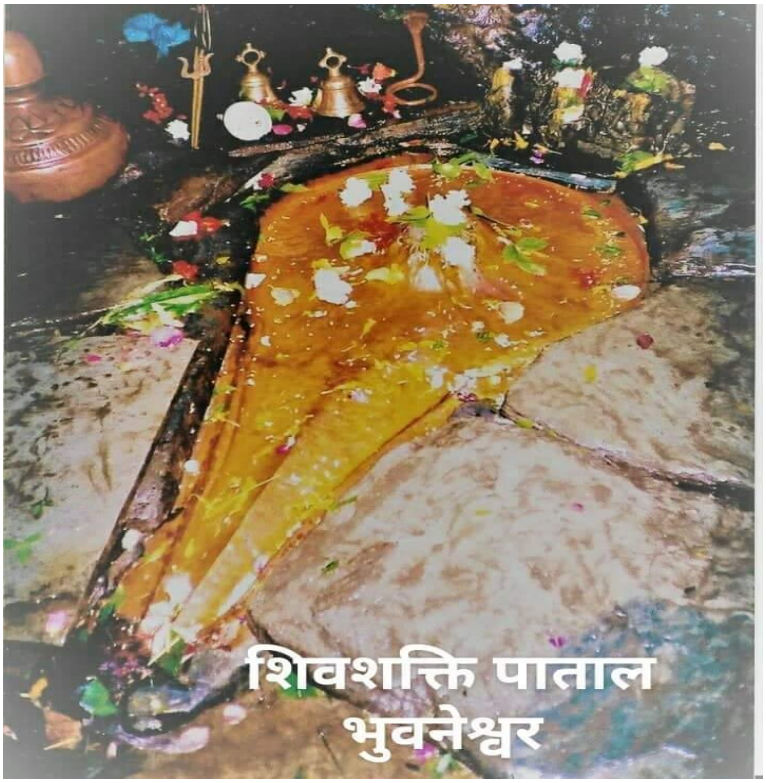

,

जहां कलियुग की संकल्पना है यह स्थान गुफा, के दाहिनी ओर से वापस निकलने के समय मिलती है,आगे बढ़ने पर पूरी तरह से बैठकर ही देखने से ऐरावत हाथी के झलक मिलते है,

सौभाग्य है कि यह सब प्रकृति ने बनाया है कहीं से भी कुछ भी मानव निर्मिति नहीं है। भगवान् शिव का झोला या झोली ,पाण्ड़व का चौपड़,पाताल देवी आदि दर्शनीय हैं।

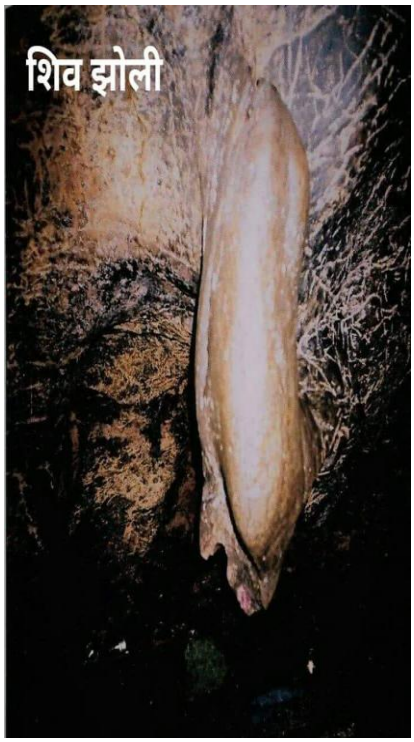

अन्त में मनोकामना क्षेत्र है,जहां भगवान् शिव का कमण्ड़लु है,उस पात्र में हाथ डाल कर अपनी मनोकामना की पूर्ति का वर मांग सकते हैं।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए मंदिर समिति के लोग सजग ,सचेत,एवं भारतीय सेना का पूर्ण सहयोग सराहनीय है। ज्ञातव्य हो कि एक समय इस गुफा में च्यूल यानि

चीड़ की लकड़ी में रोशनी का सहारा लेकर इसके अन्दर प्रवेश करना होता था जिसके कारण दर्शनार्थी को भरपूर कालिख लग जाती थी , भारतीय सेना ने जेनरेटर से अब गुफा में उत्तम प्रकार से रोशनी की व्यवस्था हो गयी है।श्री नीलम सिंह भण्ड़ारी पुजारी जी के निर्देश पर लाल सिंह ,लक्ष्मण सिंह और बच्चन सिंह आदि गाईड़ लोगों को अपनी सेवायें देते है। यहाँ के विषय में कुमाऊँ का इतिहास के लेखक बदरी दत्त पाण्ड़े ने अपनी प्रथमावृत्ति सन् 1937 ,प्रेम कुटी अल्मोड़ा यू0पी0 के दूसरा भाग,इतिहास कूर्माचंल में पृष्ठ संख्या 173 पर पाताल–भुवनेश्वर के संदर्भ में पाण्ड़े जी लिखा है कि सरयू तथा पूर्वीय रामगंगा के बीच पाताल–भुवनेश्वर का मंदिर है। ऋषियों ने व्यास से पाताल के बारे में पूछा कि

(1)वहाँ अँधेरे में महादेव कैसे रहते हैं ?

(2)वह कितनाबड़ा है ?

(3)वह कौन हैं,जो महादेव को पूजते हैं ?

(4)पाताल –लोक के मुख्य देवता कौन हैं ?

(5)सबसे प्रथम पाताल–लोक को किसने जाना ?

(6)वहाँ बिना सूर्य व चंद्रमा के लोग कैसे रहते हैं ?

व्यास जी ने कहा–''जैसी दुनिया ऊपर है,वैसी ही नीचे पाताल में भी है। वशिष्ठ व अन्य मुनि भी नहीं कह सकते कि दुनियां का अन्त कहाँहै।वे सिर्फ उतना ही जान सकते हैं,जितना पाताल–भुवनेश्वरमें जाने से ज्ञात हो सकता है। यहाँमहादेव रहते हैं। पाताल भुवनेश्वर में तीन गुफाएँ हैंः–(1)स्मर(2)सुमेरु(3)स्वधम। इनमें कोई भी पापी नहीं जा सकता । कलियुग में ये बंद रहेंगी।''पाताल कैसे जाना गया ,इसकी कथा वशिष्ठ महाराज ने इस प्रकार कही–''ऋतुपर्ण नाम का एक सूर्यवंशी अयोध्या का राजा था।वह अपनी राजधानी छोड़कर उत्तर की ओर गया। वहाँउसने बहुत से

हिरन व पक्षी मारे। जब राजा ने नदी में एक सुअर को देखा तो उसे तलवार से मारा । वह भागा। राजा ने घायल सुअर का पीछा किया ,तो पता न चला ।राजा थक गया ,और छाँह में बैठने को जगह ढूढ़ने लगा। वहाँ गुफा में उसने एक क्षेत्रपाल को बैठे देखा। उससे जगह पूछने पर उसने कहा–''गुफा में जाओ,वहाँ सब कुछ प्राप्त करोगे।''तब राजा गुफा में गया,और यहाँउसे धर्म व नृसिंह मिले।तब उनके साथ कुछ दूर जाने पर शेषनाग मिले।नाग–कन्याओं ने राजा को पकड़ा ,और अपने पिता के पास लाई। शेषनाग ने राजा से पूछा,ये कौन हैं और यहाँ कैसे आये ?राजा ने उत्तर दिया –मैं सूर्यवंशी क्षत्रिय हूँ। मेरा नाम ऋतुपर्ण है। मैं अपनी सेना लेकर यहाँ शिकार खेलने आया था । एक सुअर का शिकार करने में मैं गरमी,भूख,प्यास से थकित हो आश्रम ढूढ़ने लगा,और क्षेत्रपाल की आज्ञा से इस गुफा में आया । पूर्वजन्म में मैंने कोई अच्छे काम किये होंगे कि मुझे आपके दर्शन हुए।''

तब शेषनाग ने कहा–''डरो मत!मुझसे कहो कि पृथ्वी में चार वर्ण के लोग किन देवताओं को पूजते हैं।''राजा ने कहा–''वे महादेव को पूजकर अपनी मनोभिलाषाओं को पूर्ण करते हैं।'' तब शेषनाग ने कहा–''तुम इस गुफा को जानते हो ?यहाँ महादेव रहते हैं।''राजा ने कहा–नहीं न मैंयह जानता हूँ कि आप कौन हैं ? मैं सब बातें जानना चाहता हूँ कि आप कौन हैं ?तब शेषनाग ने कहा–''हे,राजा इस गुफा का नाम भुवनेश्वर है। इसगुफा का अन्त कहाँ हैं , कपिल व अन्य मुनि नहीं कह सकते । इसमें तीन देवता ब्रह्मा,विष्णु,महेश–भुवनेश्व रनाम से रहते हैं। यहाँ इंद्र व अन्य देवता,दैत्य गंधर्व,नाग,नारदव देवर्षि वशिष्ठ व अन्य ब्रह्मर्षि,सिद्ध,विद्याधर व अप्सराएँ आदि रहती हैं। कोई पापी आदमी इन गुफाओं में नहीं आ सकता। यह वह कंदरा है,जिसमें महादेव व पार्वती रहते हैं,उनको देखो , किंतु तुम इन आँखों से न

देख सकोगे,इससे दिव्य –चक्षु प्रदान करता हूँ।''तब राजा को शेषनाग ने दिव्य–चक्षु दिये और राजा ने यहाँ पाताल देखा,और उसमें रहने वाले गंधर्व,नाग,दैत्य,दानव,राक्षस सबों को देखा,और राजा ने उनका अभिवादन किया । शेषनाग ने उनको सर्पों की आठ जातियां दिखाईं , साथ ही ये चीजें भी दिखाईं–

(1)विश्वेश्वर का शिवलिंग,

(2)ऐरावत

(3)वृहस्पति,देवताओं के गुरु,

(4)इंद्र का घोड़ा उच्चैश्रवा,

(5)कल्पवृक्ष,

(6)शेषावती की गुफा,जिसमें सर्पों का राजा अनंत रहता है, जिसकी हवा भृगुतुंग में निकलती है,

(7)भृगुमुनि,

(8)सनत्कुमार

(9)अन्य देवर्षि

(10)हाटकेश शिवलिंग(भृगुतुंग गंगोली में पोखरी गाँव के पास ये गुफा है,जिसमें से हवा निकलती है।)

तब शेषनाग राजा को पाताल की और कन्दराओं में ले गये और उनको स्वर्ग व गणेश के मार्ग दिखाये और सतीश्वर का शिवलिंग भी दिखाया। वहाँ उसने पृथ्वी को अनंत सर्प पर रक्खी हुई देखा,और सौरेश्वर के शिवलिंग तथा पार्वती के दर्शन

किये । तब उसने राजा को पाताल भुवनेश्वरी देवी के दर्शन कराये । उनके पास वागीश व वैद्यनाथ के शिवलिंग थे साथ ही बाईं ओर ये चट्टान से छिपे हुए गणनाथ भी थे। नीचे गुफा में मर्कटमणि की तरह चमकते हुए उन्होंने एक ज्योति देखी। इसमें मुनि लोग तपस्या कर रहे थे,बीच में कपिल मुनि बैठे थे। कपिलेश का शिवलिंग भी वहीं था। दानव व दैत्यों के भवन वहाँ थे। इस रास्ते से राजा एकदम उज्जैन में पहुँचे।वहाँ उन्होंने सरस्वती नदी के तट पर महाकाल का शिवलिंग देखा। एक मुहूर्त में राजा वापस आ गये और सूक्ष्म गुफा में गणेश के दर्शन किये। दूसरी गुफा से ,जो सेतुबंध रामेश्वर को जाती थी,एक गुफा से शेषनाग ने राजा को मार्कड़ेय ऋषि का आश्रम दिखाया और केदार के पाँचों शिवलिंग दिखाये। दूसरी गुफा में उसने राजा को बैजनाथ की सड़क दिखाई। वहाँ नीलकंठ शिवलिंग तथा दैत्यों के राजा बलि भी दिखाई दिये।फिर राजा को ब्रह्मद्वार(ब्रह्मकंठी)की गुफा दिखाई। यहाँ भी शिवलिंग थे , जिनमें कामधेनु का दूध गिरता था। वहाँ शिवकुंड़ भी है,जिसका जल बिना आज्ञा के पीने से ताड़ना भी मिलती है। तब राजा ने महादेव की आज्ञा लेकर वहाँ का जल पिया,और महादेव ने राजा से कहा–''यहाँ 33 करोड़ देवता रहते हैं।''तब शेषनाग ने उनका चंद्र,तारागण,गंधर्व,और महादेव के बड़े लिंग दिखाये,जिनमें एक में ब्रह्मा,दूसरे में विष्णु बैठे थे। इन गुफाओं में तीनों देवता एक ही रुप में थे। तब स्मर की गुफा में राजा ने महादेव व पार्वती को पाँसों से जुआ खेलते देखा। अन्य देवता स्तुति करते थे,तथा एक और गुफा में ,जो 10 हज़ार योजन की थी,जिसमें एक सर्प द्वारपाल था और जो मणिमौक्तिक से चमकती थी, तथा जिसमें उन्हीं का एक भवन था , उसमें एक पलँग पर,जिसपर दूध की तरह स्वच्छ वस्त्र बिछे थे,वृद्ध भुवनेश्वर महादेव व पार्वती बैठे थे। तब शेषनाग एक और गुफा से राजा को कैलास में ले गया। वहाँ उसने मानसरोवर में स्नान किया। फिर वे लौटे , और राजा को सुमेरु की गुफा दिखाई दी, जिसमें जटाधारी,ब्याघ्र–चर्म

धारण किये ,सर्प की जनेऊ पहने शिव शयन करते थे,और वहाँ पर उग्रतारा देवी बैठी थी और उन्होंने राजा को 'स्वधम'की गुफा दिखाई। वहाँ राजा ने पूछा कि वह दिव्य ज्योति किसकी है ? तब शेषनाग ने कहा– ''यह तेजो मय महादेव हैं किसी से मत कहना। इस ज्योति से विष्णु,ब्रह्मा व शिव उत्पन्न हुए,जब कि दुनिया बनी थी। इसी ज्योति से संसार प्रकाशमान है। इसके बीच में देखो,तुम्हें एक स्वरुप जगत्पालक विष्णु का दिखाई देगा, जो वेदान्त व शास्त्रों को जानते हैं,वे इस ज्योति को ब्रह्म कहते हैं।देवता तक इस ज्योति के पास नहीं आ सकते। इसका पूजन करो। इस गुफा से केदार को रास्ता जाता है।''

तब राजा केदार गये और शिवलिंग की पूजा की ,उदकस्रोत(उदकनौली)में जल पिया। तब महापंथ होकर लौट आये। राजा ने यह सब चमत्कार देखकर अपने मन में कहा–''क्या मैं पागल हूँ या स्वप्न देखता हूँ,जिसे देख रहा हूँ।''

तब शेषनाग ने राजा से कहा – ''तू रत्नों के बोझ ले जा,जिनको राक्षस तेरे यहाँ पहुँचा देंगे,और ले यह घोड़ा,जिसकी गति वायु की सी है। इसमें सवार होकर अपने घर को जा। यहाँ का वर्णन किसी से न कहना। तू और तेरे वंशज सुखी रहेंगे। बाद को बत्कल नामक एक ब्राह्मण उत्पन्न होगा,वह जगत् को इस गुफा का वर्णन बतावेगा।''

तब राजा ने शेषनाग को धन्यवाद दिया,और घोड़े पर चढ़कर,राक्षसों के साथ दारुकवन होकर,सरयू के किनारे गया। वहाँ उसने अपनी सेना को उसे ढूढ़ते हुए पाया। वह अयोध्या को आया और रत्नों को अपने खजाने में रखकर राक्षसों को विदा किया। तब रानी व पुत्र–पौत्रों को बुलाकर उनसे सब बातें,जो – जो देखी थीं,कहीं, और रत्न सब उनको बाँट दिये। जब राजा पाताल की बातें कह रहा था, महादेव के दूत आये और राजा को शिवलोक को ले गये। जो कोई ऋतुपर्ण की

कथा को सुनेगा और पातालभुवनेश्वर माहात्म्य को पढ़ेगा, उसके सब पाप मुक्त हो जाएँगे और वह शिवलोक को जाएगा।

मानसखण्ड़ कब बना ,यह कहना कठिन है। मानसखण्ड़ स्कन्द पुराण का एक खंड़ माना जाता है। सारा स्कन्दपुराण छप गया,पर यह खंड़ नहीं छपा । मानस खंड़ कूर्माचल में कूर्माचली पंड़ितों ने बनाया है,ऐसा हमारा अनुमान है।

पातालभुवनेश्वर के पुजारी मानसखण्ड़ के प्रति अपने विचार प्रस्तुत करते है और कहते हैं कि यह विवरण मानस खण्ड़ का ही है, जो बाद में लिखा गया होगा ,किन्तु वास्तु आज भी उपस्थिति दर्ज करा रहा है,और अपनी मौलिक प्रामाणिकता की कहानी स्वयं कह रहा है,आप स्वयं आईये दर्शन कीजिए ,पर्यटन नहीं तीर्थ का पुण्य अर्जित करिये।

****